इतिहास के स्रोतों से...पहले शिलालेख

एक था चपड़...

सी. एन. सुब्रह्मण्यम्

चित्र:1

वह राजा अशोक के राज्य में लिपिकर यानी कि लिखने का काम करता था। लिखना मतलब कागज़ पर पेन से लिखना नहीं, बल्कि चट्टानों पर छैनी व हथौड़ी से खोदना। यह कोई आसान काम न था। लेकिन हमारे चपड़ साहब इस कला में माहिर थे।

चित्र 1: आँध्रप्रदेश के नागार्जुनकोण्डा से प्राप्त शिल्प पटल जो आज से लगभग 1800 साल पुराना है।

तुम शायद जानते होगे कि राजा अशोक आज से कुछ 2250 साल पहले राज करता था। उसकी राजधानी तो पाटलिपुत्र या आज का पटना थी, लेकिन उसका राज्य उधर अफगानिस्तान से बंगाल और कश्मीर से कर्णाटका प्रांत तक फैला था। इतना विशाल राज्य न पहले कभी बना न उसके बाद। हाँ, अँग्रेज़ों के समय ज़रूर इतना बड़ा राज्य बना था।

तो, हमारे चपड़ साहब राजा अशोक की सेवा में थे। अशोक को अपनी प्रजा को तरह-तरह के सन्देश देना अच्छा लगता था – भई, "सब लोग एक दूसरे से प्रेम पूर्वक रहो, माता-पिता का आदर करो, दूसरे धर्म के लोगों की इज़्ज़त करो, नौकर-चाकर से अच्छा व्यवहार करो आदि-आदि बातें।" चपड़ का काम था इन सन्देशों को पूरे राज्य में जगह-जगह जाकर चट्टानों पर खुदवाना ताकि लोग उसे सैकड़ों साल तक पढ़ सकें। और भी ऐसे कर्मचारी उस समय अशोक के पास रहे होंगे, मगर हमें सिर्फ चपड़ का नाम मिलता है। तुम पूछोगे कि चपड़ का नाम कैसे मिल गया? उसकी एक कहानी है।

कर्णाटका के चित्रदुर्ग ज़िले की तीन पास-पास की जगहों से हमें अशोक के शिलालेख मिले हैं। पता नहीं, उन्हें खोदने वाले को क्या सूझा कि उसने अपना नाम भी बाकायदा तीनों जगहों पर खोद दिया। उसने अशोक के बड़े प्रभावी सन्देश के अन्त में एक छोटा-सा वाक्य और जोड़ दिया –

"चपड़ेन लिखिते लिपिकरेण"

यानी चपड़ लिपिकर द्वारा लिखा गया। अगर अशोक को यह पता चला होगा तो क्या हुआ होगा, पता नहीं। शायद वह अशोक की सहनशीलता का परीक्षण करना चाहता था। या फिर उसे केवल अपने नाम को अमर करने की इच्छा थी। लेकिन मज़े की बात यह है कि उसने अपना नाम लिखते समय एक और खुराफात कर दी।

अगर तुम इस चित्र को ध्यान से देखो तो उसकी खुराफात कुछ समझ में आती है। इन तीन शब्दों में दो एक तरह से लिखे गए हैं और तीसरा एक और तरह से। वास्तव में चपड़ साहब ने दो अलग लिपियों में अपना हस्ताक्षर कर दिया है।

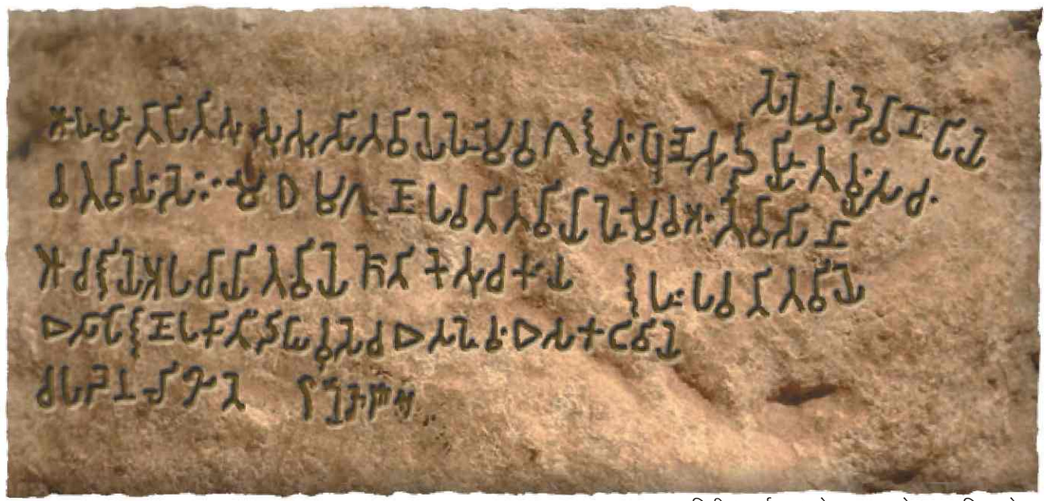
ब्रह्मगिरी (कर्नाटक) से प्राप्त अशोक का शिलालेख

पहले दो शब्द तो बाकी शिलालेख की तरह ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं। आखरी शब्द एक अन्य लिपि – खरोष्ठी लिपि में लिखा गया है। ब्राह्मी अँग्रेज़ी या देवनागरी जैसे बाईं से दाईं ओर लिखी जाती थी। और खरोष्ठी उर्दू की तरह दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी। यह लिपि उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान इलाके में प्रचलित थी। कई लोग यह मानते हैं कि शायद चपड़ उत्तर-पश्चिम का रहने वाला था जिसे सुदूर कर्णाटका में राजा का सन्देश खुदवाने के लिए भेजा गया होगा।

अब सवाल यह है कि क्या उन्हें वहाँ आसपास कोई लिखने वाला नहीं मिला होगा? अब हम पहुँचते हैं अपनी कहानी के क्लाइमैक्स पर। इतिहासकारों का मानना है कि राजा अशोक या उससे कुछ पचास-सौ साल पहले ही हमारे देश में व्यवस्थित रूप से लिखने की प्रथा बनी। अशोक ने इस लिपि का सहारा लेकर अपनी बात समूचे विशाल राज्य में फैलाने का प्रयास किया। इस लिपि को हम आज ब्राह्मी लिपि कहते हैं और यह लिपि भारत की लगभग सभी भाषाओं की लिपियों की माँ है, चाहे वह हिन्दी (देवनागरी लिपि) हो या तमिल, कन्नड़ या बांगला लिपि हो। ये सारी लिपियाँ ब्राह्मी से उपजी हैं। हालाँकि ब्राह्मी व खरोष्ठी बहुत अलग तरह की लिपियाँ थीं फिर भी उनके बीच काफी आदान-प्रदान हुआ। बिलकुल उसी तरह से जैसे कोई नई चीज़ बनाने वाले एक दूसरे से सीखते हैं।

यानी उन ही दिनों हमारे देश में एक ऐसे चमत्कार का आविष्कार किया गया जिसे हम लिखना कहते हैं। खासकर चट्टान पर खोदकर लिखना। शायद चपड़ उन सबसे पहले लिखने वालों में से था जिन्होंने इस आविष्कार को रूप दिया और जगह-जगह फैलाया। इसीलिए शायद उसे सुदूर कर्णाटका में बुलाया गया था।

चपड़ जैसे कुछ और लिपिकर रहे होंगे जिन्होंने अपने देश में लिखने की प्रथा की नींव डाली। लेकिन हमें सिर्फ चपड़ का नाम मिलता है। शायद इसलिए क्योंकि उसने हिम्मत की.... हिम्मत, एक महान शक्तिशाली राजा के सन्देश में अपना अदना-सा नाम जोड़ने की।

काको तो म्हारी अंटी में है!

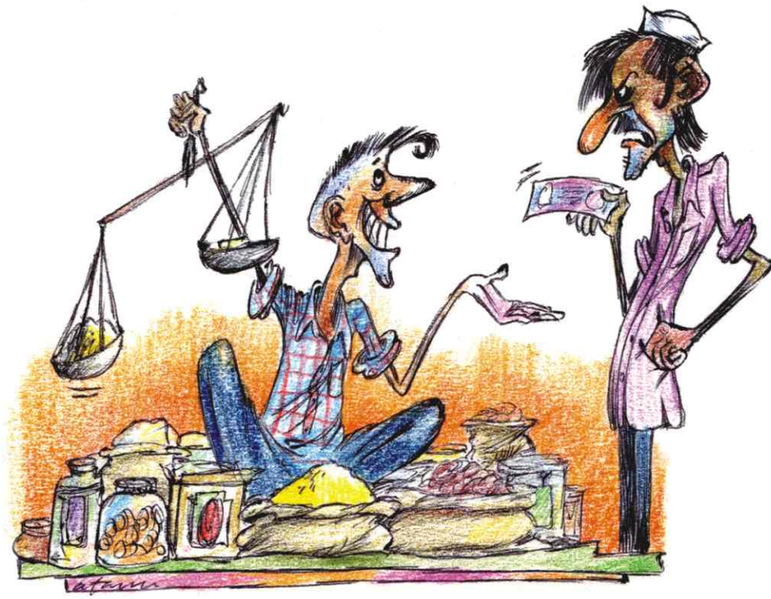

गाँव में एक ही दुकान थी। सब लोग वहीं से सौदा करते थे। गाँव में उधारी-सुधारी तो चलती रहती है क्योंकि उनके पास पैसा तो फसल आने पर ही आता है। जो उधारी समय पर नहीं चुकाते, टालमटोल करते, कुन्नट करते वे ब्लैक लिस्ट में शामिल कर लिए जाते। ऐसे लोगों को मुँह से तो नहीं बिगाड़ते पर सामान देने में बहानेबाजी करने की कला में सेठ अपने पुत्र को पारंगत कर देते। कोई उधार माँगने वाला आता तो उससे कहते सामान नहीं है या फिर यह कहते कि काका नहीं है।

सेठ का लड़का एक ग्राहक को शक्कर तौल ही रहा था कि उध्यारा भगत (उधार लेने में माहिर) आ गया। ग्राहक को शक्कर तौल रहा था इसलिए वह मना तो नहीं कर सकता था कि शक्कर नहीं है। उसने फार्मूला नम्बर दो काम में लिया कि काका नहीं है।

उध्यारा भगत उधार शक्कर देने को कहता तो बनिए का लड़का कहता, " उधार काका देंगे मैं नहीं।" उध्यारा भगत कहता, " काका कहाँ हैं?" बनिए का पुत्र कहता, " काका नहीं है।" इस वादविवाद में आखिरकार उध्यारा भगत हार गया और बोला " छोरा देरे शक्कर थारो काको तो म्हारी अंटी में" यह कहकर उसने अंटी (जेब) से मुड़ा-तुड़ा नोट निकाल कर सामने रख दिया।

सेठ के लड़के ने खुशी-खुशी शक्कर तौल दी।

प्रस्तुतिः बंशीलाल परमार

चित्र : अतनु राय